कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

पशुओं हेतु टीकाकरण तालिका

क्रं.	रोगों का नाम	टीके का नाम	टीके लगाने का उचित समय	टीकाकरण निर्धारित कार्यक्रम		
1	खुरपका - मुंहपका	एफ.एम.डी.वेक्सीन	सितम्बर - मार्च	पहला 4 माह की उम्र में	दूसरा 9 माह की उम्र में	बाद में प्रत्येक वर्ष,माह सितम्बर व मार्च
2	ब्लैक क्वार्टर (लंगडा बुखार)	बी.क्यू.वेक्सीन	मई - जून	6 माह	.....	प्रत्येक वर्ष माह मई जून
3	एच.एस.(गलघोटू)	एच.एस. वेक्सीन	मई - जून	6 माह	.....	प्रत्येक वर्ष माह मई जून
4	एन्थ्रैक्स	स्पोर वेक्सीन	मई - जून	6 माह	.....	प्रत्येक वर्ष माह मई जून
5	ब्रुसेला	ब्रुसेला वेक्सीन	.....	4-8 माह की उम्र में केवल बछियों के लिए	.....	जीवन में एक बार

कृमिनाशक दवा देने का समय

1. पहली खुराक 10 - 12 दिन के बछियों / बछडों को।
2. दूसरी खुराक 1 महीने के बछियों / बछडों को ।
3. फिर अगले 6 माह तक हर महीने 1 खुराक ।
4. फिर हर 3 माह में एक बार ।

दवा और खुराक के लिए किसी वेटनरी डॉ. से सलाह लेनी चाहिए ।

डॉ. दिवाकर वर्मा (पशुपालन वैज्ञानिक) 6264 419 035

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर, पलिया–पिपरिया, बनखेड़ी

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

पशुओं में थनैला रोग

यह रोग बीमारी सामान्यतः गाय, भैंस, बकरी एवं सुअर सहित लगभग सभी पशुओं में पायी जाती है। जो अपने बच्चों को दूध पिलाती है । यह बीमारी पशुओं में कई प्रकार के जीवाणु विषाणु फफूंद, यीस्ट तथा मोल्ड के संक्रमण से होता है। इसके अलावा चोट तथा मौसमी प्रतिकूलताओं के कारण भी थनैला हो सकता है।

लक्षण

- प्रारंभ में थन गर्म हो जाता है तथा उसमें दर्द एवं सूजन हो जाती है।
- दूध में छटका, खून एवं पीभ की अधिकता हो जाती है।
- हल्का बुखार तथा पशु सुस्त, चारा दाना कम खाता है। सही इलाज नही मिलने पर थन हमेशा के लिए बेकार हो सकते है।
- कभी कभी लक्षण धीरे धीरे प्रकट होते है
- लंबे समय के कारण थन में फाइब्रेसिस हो जाने के कारण ठंडा एवं कठोर हो जाता है। तथा दबाने पर दर्द नही होता है।

रोकथाम के उपाय

- दुधारू पशुओं के रहने के स्थान की नियमित सफाई जरूरी है।
- दूध दुहने से पहले हाथ तथा थन की सही सफाई एवं दूध निकालने के बाद टीट को ग्लीसरीन बीटाडीन (1:1) में डुबोयें।
- दूध दुहने के लिए सही तकनीक अपनायें एवं थन से पूरा दूध निकालें।
- पी. एच. पेपर एवं कैलीफोर्निया मस्टाईटिस सोल्यूशन द्वारा समय समय पर जॉच करे।
- दूधारू पशुओं में दूध बंद होने की स्थिति में ड्राई थैरेपी द्वारा इलाज करें।
- लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सक से संपर्क करे।

डॉ. दिवाकर वर्मा (पशुपालन वैज्ञानिक) 6264 419 035

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

लंगड़ा बुखार (ब्लैक क्वार्टर)

प्रचलित नाम

फड़सूजन , कालावाय, लंगड़िया, एक टंगा

यह रोग मुख्य रूप से गाय,भैस तथा भेड़ में होती है। यह रोग 6 से 2 साल तक की आयु वाले पशुओं में अधिक पाया जाता है।

लक्षण

- पशुओं को तेज बुखार (तापमान 106 - 107) आता है।
- पशु के पिछली व अगली टांगों के उपरी भागों में भारी सूजन आता है। जिससे पशु लंगडा कर चलने लगता है।
- पैरों के अतिरिक्त सूजन पीठ, कंधे तथा अन्य मांस पेशियों वाले हिस्से में भी हो सकते है।

रोकथाम के उपाय

- वर्षा ऋतु से पूर्व टीकाकरण करवालेना चाहिए।
- रोगग्रस्त पशुओं को स्वस्थ्य पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- सूजन को चीरा मारकर खोल देना चाहिए जिससे जीवाणु हवा के संपर्क में आने से अप्रभावित हो जाते है।
- सूजन वाले भाग में चीरा लगाकर 2 प्रति. हाइड्रोजन पराक्साइड तथा पोटेशियम परमैग्नेट से ड्रेसिंग करना चाहिए ।
- लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सक से संपर्क करे।

डॉ. दिवाकर वर्मा (पशुपालन वैज्ञानिक) 6264 419 035

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

पशुओं में गलघोंटू (एच.एस.)

प्रचलित नाम – गलाघोंटू, डकहा, अशढ़िया

अतितीव्र ज्वर के साथ प्रारंभ होने वाला गाय तथा भैंस को प्रभावित करने वाला जीवाणु जनित रोग है। जो प्राय: महामारी के रूप में फैलता है। बरसात के दिनों में इस रोग के फैलने की संभावना अधिक रहती है।

लक्षण

- तेज बुखार 104 – 108
- ठंड जैसी कपकपाहट ।
- मुंह से लार टपकना ।
- आंसूओं का साव ।
- ऑख तथा अन्य भलेशमा झिल्लियों में लालीपन ।
- गले के नीचे तथा अगले पैरों के बीच में गर्म कठोर तथा पीड़ादायक सूजन ।
- श्वॉस में घड़घराहट ।
- मृत्यु दर 10 – 100 प्रतिशत

रोकथाम के उपाय

- पशु शाला को स्वच्छ रखें ।
- अपने पशुओं को प्रतिवर्ष बरसात से पूर्व टीकाकरण अवश्य करायें।
- बीमारी से ग्रसित पशुओं को स्वस्थ पशु से अलग रखें।
- लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सक से संपर्क करे।

डॉ. दिवाकर वर्मा (पशुपालन वैज्ञानिक) 6264 419 035

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

पशुओं में खुरपका – मुंहपका रोग (एफ.एम.डी.)

यह एक विषाणु जनित बीमारी है। जो फटे खुर वाले पशुओं को ग्रसित करती है। इसकी चपेट में सामान्यत: गाय भैस बकरी व सुअर जाति के पशु आते है। यह एक छूत बीमारी है।

लक्षण

- पैरों में सूजन (खुर के आस पास)
- प्रभावित पैर को झटकना लंगडाना ।
- एक से दो दिन का बुखार ।
- खुर में घाव तथा कीड़े पड़ जाना ।
- मुंह से लार गिरना ।
- जीभ मसूढ़े आदि पर छाले पड़ जाते है जो बाद में फूटकर मिल जाते है।

रोकथाम के उपाय

- रोग ग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल के छाले का कढ़ा बनाकर दिन में 2-3 बार धोना चाहिए।
- रोग से प्रभावित पैरों को फिनाइल युक्त पानी से दिन में 2-3 बार धोकर मक्खी को दूर करने वाले मलहम का प्रयोग करना चाहिए।
- मुंह के छाले को 1 प्रति. फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी 100 मि.ली. पानी में घोलकर दिन में 3 बार धोना चाहिए।
- लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सक से संपर्क करे।

डॉ. दिवाकर वर्मा (पशुपालन वैज्ञानिक) 6264 419 035

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

पशुओं में लीवर – फ्लूक (छेरा रोग) की बीमारी

पशुओं की यह परजीवी बीमारी है। इस परजीवी के अवयस्क लार्वा घोंघा से निकलकर नदी, पोखर, तालाब के किनारे वाले घास की पत्तियों पर लटके रहते है। पशु जब इस घास के संपर्क में आते है तो परजीवी पशुओं के शरीर में प्रवेश कर जाते है।

लक्षण

- भूख में कमी होना ।
- रोयें का भीगा भीगा होना ।
- शरीर का दुर्बल होते जाना ।
- बदबूदार बुलबुले के साथ पतला दस्त ।
- घोंघ फूल जाना ।
- उठने में कठिनाई होना ।
- उचित इलाज न होने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

रोकथाम के उपाय

- बाढ़ प्रभावित तथा जल भराव वाले क्षेत्रों के पशु पालक इस रोग से अधिक सतर्क रहें।
- कृमिनाशक दवा विशेषकर आक्सीक्लोजानाइड (1 ग्राम प्रति 100 कि.ग्राम.पशु वजन के लिए) का प्रयोग करना चाहिए ।
- दवा खाली पेट खिलायें।
- वर्ष में दो बार तथा प्रत्येक बार में 15 दिन के अंतर पर दो खुराक दवा का प्रयोग करें।
- लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सक से संपर्क करे।

डॉ. दिवाकर वर्मा (पशुपालन वैज्ञानिक) 6264 419 035

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर, पलिया–पिपरिया, बनखेड़ी